"पं नारद कृत "संगीत मकरंद" ग्रंथ मे वर्णित ताल एवं अवनद्ध वाद्यों का समग्रलक्षी अध्ययन"

"Pt. Narad krut "Sangeet Makarand" Granth me varnit Taal evm Avanaddha Vaadhyo ka Samagralakshi Adhyayan"

A Thesis Submitted

To

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA FOR THE AWARD OF THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY

IN

TABLA

BY

AKSHITA BAJPAI

UNDER THE GUIDEANCE OF

PROF. GAURANG BHAVSAR

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA
सत्यं शिवं सुन्दरम्
Estd. 1949
Accredited "A+" by NAAC

Prof. Gaurang Bhavsar
HEAD
Department of Tabla
Faculty of Performing Arts
The M. S. University of Baroda

DEPARTMENT OF TABLA
FACULTY OF PERFORMING ARTS
THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA
VADODARA -390001
2019-2024

DEAN
Faculty of Performing Arts
The Maharaja Sayajirao University of Baroda
Vadodara.

Registration Date: 20 March 2019

Registration No: FOPA/86

CERTIFICATE

THIS IS TO CERTIFY THAT THE THESIS ENTITLED

"पं नारद कृत "संगीत मकरंद" ग्रंथ मे वर्णित ताल एवं अवनद्ध वाद्यों का समग्रलक्षी अध्ययन"

SUBMITTED BY

AKSHITA BAJPAI

FOR THE AWARD OF DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY IN

TABLA

TO

THE MAHARAJA SAYAJIRAO UNIVERSITY OF BARODA, HAS BEEN CARRIED OUT UNDER MY SUPERVISION AND GUIDANCE. THE MATTER COMPILED IN THIS THESIS HAS NOT BEEN SUBMITTED FOR THE AWARD FOR ANY OTHER DEGREE OR FELLOWSHIP.

(Prof. GAURANG BHAVSAR)

Guide

DECLARATION

I hereby declare that the thesis entitled,

"पं नारद कृत "संगीत मकरंद" ग्रंथ मे वर्णित ताल एवं अवनद्ध वाद्यों का समग्रलक्षी अध्ययन"

Which is submitted to The Maharaja Sayajirao University of Baroda for the award of the Degree of Doctor of Philosophy in Tabla is the result of the work carried out by me in Department of Tabla, Faculty of Performing Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda under the guidance of **Prof. (Dr.) Gaurang Bhavsar.**

I further declare that the result of this work has not been previously submitted for any Degree/Fellowship.

Akshita

(Akshita Bajpai)
Research scholar

Place: Vadodara

Date:

कृतज्ञता ज्ञापन

शोध कार्य को पूर्ण करने के इस मौके पर, मैं अपने **स्वर्गीय माता-पिता राघवेंद्र बाजपेयी व शशि बाजपेयी** के समर्पण, प्रेम और आशीर्वाद के लिए आभारी हूँ। आप दोनों ने हमेशा मुझे शिक्षा के लिए प्रेरित व उत्साहवर्धन किया आज आप की कमी का बहुत आभास हो रहा है, लेकिन मुझे पता है की आप दोनों का आशीर्वाद हमेशा मेरे साथ है।

मैं अपने पति **श्री कृष्ण भारद्वाज** का भी आभार प्रकट करती हूँ जिन्होने मेरे शोधकार्य मे बहुत सहयोग किया तथा सदैव प्रेरित व प्रोत्साहित किया ।

माता-पिता के बाद मेरे आदर्श, गुरु, **मार्गदर्शक प्रो० गौरांग भावसार** और **गुरुमाँ श्रीमती दीना गौरांग भावसार** जी का नाम सर्वप्रथम आता है। जिनका जितना आभार प्रकट करू उतना कम है मैं सदैव ऋणी रहूँगी। समर्पण और सहयोग से भरा हुआ यह शोध कार्य शिक्षा सफलता की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है, आपका आदर्शवाद, सुझाव, और उत्साह ने मुझे इस यात्रा में प्रेरित किया है।

इस शोध कार्य में मेरे साथ बने रहने के लिए मैं अपने **मार्गदर्शक प्रो० गौरांग भावसार जी** की सदैव कृतज्ञ रहूँगी। आपने मेरे सवालों और समस्याओं का समाधान किया है और मेरे अध्ययन को सुनिश्चित रूप से पूरा करने में मदद की है। आपका समर्थन मेरे अध्ययन को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण रूप से योगदान करता है, जिससे मेरा विश्वास और स्वाभाविक रूप से बढ़ता है। आपके साथ यह सिखना एक अनुपम अनुभव था, जिसने मेरे शोधार्थी जीवन को समृद्धि और सशक्तता से भर दिया है। धन्यवाद के आभास से मैं आपकी कृतज्ञ हूँ। आपके साथ बिताए गए समय ने मेरे जीवन को एक नए स्तर पर ले जाने में मदद की है, और मैं इस यात्रा को स्वीकारने के लिए आपकी बड़ी कृतज्ञ हूँ। समापन में, मैं कहना चाहती हूँ कि आपके साथ काम करने का यह सुअवसर मेरे लिए एक अनमूल्य अनुभव रहा है। मैं आपके समर्थन के लिए हमेशा कृतज्ञ रहूँगी, और आपके मार्गदर्शन में मुझे एक अच्छे शिक्षार्थी और अन्वेषक के रूप में सुनिश्चित करेगा। एक बार फिर, आपका धन्यवाद मेरे जीवन में आपका योगदान अद्वितीय और अमूल्य है, और मैं गर्व से यह कह सकती हूँ कि मैंने आपके मार्गदर्शन में एक सशक्त शोध कार्य पूर्ण किया है। आपके समर्पण और सहानुभूति के लिए हार्दिक आभार।

तत्पश्चात् द महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी के फैकल्टि ऑफ परफार्मिंग आर्टस के डिपार्टमेंट ऑफ तबला के **गुरू प्रो०(डॉ०) अजय अष्टपुत्रे, डॉ केदार मुकदम, श्री, दीपक सोलंकी** सभी गुरुओं का मार्गदर्शन

मिला। जिसके कारण ही शोधार्थी का कार्य पूर्णत: की ओर अग्रसर हो पाया इसका पूर्ण श्रेय विभाग के गुरूजनों का है, इन सभी गुरूजनों का जितना भी आभार प्रेशित किया जाए उनता कम है।

गायन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ० राजेश केलकर जी का भी हृदय से अभार प्रकट करती हूँ, जिनके प्रोत्साहन से मैं यहाँ पीएचडी करने के लिए आ पायी, आपने कई बार मेरा मार्गदर्शन किया तथा सहयोग स्वरूप आर्शिवाद प्रदान किया। साथ ही मैं बड़ौदा संस्कृत महाविद्यालय के **विभागाध्यक्ष डॉ० रामपाल शुक्ल जी** का आभार प्रकट करती हूँ आपने कार्यव्यस्था होने पर भी अपना कीमती समय निकाल कर अनुवाद का कार्य पूर्ण करवाया।

प्रो०(डॉ०)अजय अष्टपुत्रे जी की भी मैं आभारी हूँ, जो मेरे पीएचडी रजिस्ट्रेशन के समय फैकल्टी ऑफ परफॉर्मिंग आर्टस् के ड़ीन थे। जिनके सहयोग, आशीर्वाद व शुभकामनाओं से मेरा कार्य सफल हो पाया।

इसके उपरांत मैं **डॉ० चिराग सोलंकी**, अपने सहपाठियों व सहमित्र **जयदीप लकुम**, **दीपेश ढोडी, धनंजय वेकरिया, धैवत मेहता, केवल पटेल, दीपांशी गुप्ता, हर्ष चौहान,** का धन्यवाद करती हूँ जो मेरे शोधकार्य मे सहायक रहे।

इसके उपरांत में अपनी फैकेल्टी के पुस्तकालय का धन्यवाद करना चाहती हूँ पुस्तकालय में कार्यरत **कोकिला मैडम** का तहे दिल से आभार प्रकट करती हूँ जिन्होने हमेशा मुझे मेरे कार्योचित ग्रंथ तथा पुस्तक उपलब्ध करवाई साथ ही में इस शोध प्रबंध हेतु दत्त सामग्री के संकलन में **(Oriental Institute of Baroda) प्राच्य विद्या मंदिर बड़ौदा** तथा सभी विद्वानों व प्रकाशको का भी आभार प्रकट करती हूँ जिनकी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सहयोग तथा सहायता द्वारा यह शोधकार्य संपूर्ण हो सका है इन सभी की मैं सदैव ऋणी रहूँगी

अंत मे सभी से मैं आशीर्वाद की कामना करती हूँ।

धन्यवाद

अक्षिता बाजपई

प्राक्कथन

भारतीय संगीत की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि इनती वृहद और विशाल है, कि इसके आरंभ कि खोज अकल्पनीय है, क्योकि संगीत देवताओं द्वारा निर्मित है, जिसको वेदों, पुराणों, उपनिषदों के द्वारा ही समझा व देखा जा सकता है। भारतीय संस्कृति मे शोध, अनुसंधान का कार्य अति प्राचीन काल से ऋषि मुनियों द्वारा निरन्तर किया जाने वाला कार्य रहा है। ऋषि मुनियों के द्वारा किए गए अनुसंधान व उनकी गहरी सोच से उत्पन्न कई शोध हमारे इतिहास मे विधमान है। संगीत व संगीत के इतिहास के विषय मे "स्वामी प्रज्ञानन्द जी द्वारा उनकी पुस्तक संगीत व संस्कृति के द्वितीय भाग की भूमिका मे यह उल्लेख प्राप्त होता है कि" भारतीय संगीत के इतिहास का रचना काल अभी भी सामने नहीं आया है। इतिहास अतीत की प्रत्येक सूक्ष्म अति सूक्ष्म घटनाओं का निरपेक्ष परिचय देने वाला अग्रदूत है। कोई भी तथ्य इतिहास कि दृष्टि से उपेक्षणीय नही है। आज भी संगीत की प्राचीन असंख्य पांडुलिपियाँ यत्र-तत्र अप्रकाशित पड़ी हुयी है। जब तक विद्वानों द्वारा अनुशीलन एवं औचित्य पूर्ण प्रकाशन न हो जाये तब तक भारतीय संगीत के पूर्ण इतिहास कि रचना संभव नहीं है। जितने ग्रंथ वर्तमान मे उपलब्ध है ऐसा नही है, की इतने ही ग्रंथ रचे गये हों कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ व पांडुलिपियाँ सुरक्षित कर ली गयी तथा कुछ ग्रंथ संभवत: काल के गर्भ मे लुप्त हो गये।

संस्कृत साहित्य में नारद कृत "संगीत मकरंद" महत्वपूर्ण ग्रंथों में से एक है। यह संगीत और संगीतशास्त्र के कई पहलुओं का समर्थन, विश्लेषण और व्याख्यान करता है। नारद के अनुसार संगीत सिर्फ मनोरंजन का एक साधन नहीं है; यह आत्मा को उत्तेजित करने, प्रसन्न करने और दिव्यता की ओर प्रेरित करने का भी एक साधन है। नारद का महत्वपूर्ण संगीत ग्रंथ, "संगीत मकरंद", भारतीय संगीत के समृद्ध और मूल्यवान विचारों का समर्थन, विस्तार और विश्लेषण करता है। महर्षि नारद ने संगीत के विषयों पर व्याख्यान, समीक्षा और और संवाद का प्रस्तुतिकरण किया है। "संगीत मकरंद" ग्रंथ में संगीत के विभिन्न पहलुओं, जैसे स्वर, राग, ताल, लय, रस और रागिनियाँ, पर विस्तृत चर्चा की गई है। इस ग्रंथ के माध्यम से शोधार्थी का उद्देश्य पाठकों को भारतीय संगीत के महत्वपूर्ण सिद्धांतों और विचारों का व्यापक परिचय देना है और इसके रहस्यमयी विश्व को समझाना है।"संगीत मकरंद" ग्रंथ के माध्यम से संगीत की विशिष्ट संस्कृति और विरासत को उजागर करना, और संगीत की आध्यात्मिकता को समझना है। "संगीत मकरंद" ग्रंथ विश्व की संगीत परंपराओं में से एक का महत्वपूर्ण स्रोत है, और इसका अध्ययन और अनुसंधान भारतीय संगीत को रोमांचक रूप से समझने का एक माध्यम प्रदान करता है। इस ग्रन्थ के माध्यम से हम अपने संगीत और सांस्कृतिक धरोहर को अधिक से अधिक समझ पाये, साथ ही उसके साथ जुड़े तथ्यो और साक्ष्यों से रूबरू हो पाये ।